A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

बागड़ी लोक गीतों में संगीतात्मकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Deepika Srivastava[1], Prof. Rajinder Kumar Sen[2], Punam Devarth[3], Rohit Kumar[4]

1 Department of Performing and Fine Arts, Central University of Punjab
2 Department of Hindi, Central University of Punjab
3 Research Scholar, Department of Hindi, Central University of Punjab
4 Research Scholar, Department of Performing and Fine Arts, Central University of Punjab

OPEN ACCESS

सार

साहित्य और संगीत का आपस में गहरा संबंध होता है। साहित्य की विविध विधाओं काव्य संगीत के अधिक नजदीक होता है। संगीत काव्य की आत्मा के रूप में रूपायित होता, जिसके अंतर्गत काव्य में गेयता का तत्व समाहित हो जाता है और यही गेयता काव्य की जीवंतता का आधार बन जाती है। गेयता के कारण काव्य गीत बन जाता है और श्रोताओं के मन-मस्तिष्क के साथ-साथ हृदय प्रदेश पर प्रभाव डालता है। लोकगीत में गेयता के तत्व समाहित होते हैं जिसके परिणामस्वरूप एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आसानी से हस्तांतरित होते रहते है। लोकगीत के रचयिता यद्यपि शास्त्रों के ज्ञाता नहीं थे और न ही वे गेयता तत्वों के विषय में जानते रहे होंगे। शताब्दियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ये गीत हस्तांतरित हो रहे हैं। इन लोकगीतों में संगीतात्मकता के तत्वों का विश्लेषण करके इन गीतों की गेयता के तत्वों का उद्घाटन करनो अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। राजस्थान, पंजाब और हरियाणा की सीमाओं पर सटा अंचल बागड़ी बोली का क्षेत्र है। प्रस्तुत शोधपत्र में बागड़ी बोली के लोकगीतों में संगीतात्मकता का विश्लेषण करके इसके गेयता पक्ष को उभारा गया है।

बीजशब्द: *बोली, गीत, गेयता, संगीत, राग, ताल*

भारत में सांस्कृतिक एवं भाषागत विविधता देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रमाण है। विश्व में सर्वाधिक भाषाएं एवं बोलियां इसी देश में बोली जाती है। देश के सबसे बड़े भू-भाग की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी है। परंतु हिन्दी की समृद्धि का आधार केवल मात्र मानक बोली नहीं अपितु हिन्दी के अंतर्गत समाहित सभी बोलियों का पुट है। राजस्थानी हिन्दी भौगोलिक दृष्टि से हिन्दी की एक महत्त्वपूर्ण उपभाषा है। राजस्थानी की बोलियों - मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूँढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, मालवी, शेखावटी एवं बागड़ी आदि में बागड़ी बोली अत्यंत उपेक्षित बोली रही है। अन्य बोलियों में साहित्य रचना की परंपरा देखने को मिलती है परंतु बागड़ी बोली में केवल लोक साहित्य ही उपलब्ध है।

डा. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी पुस्तक Linguistic Survey of India में राजस्थानी का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।''[1] श्री नरोतमदास स्वामी ने राजस्थानी बोलियों को चार वर्गों में विभाजित किया है-

(1) पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी

(2) पूर्वी राजस्थानी या ढूँढाड़ी

(3) उतरी राजस्थानी या मेवाती एवं अहीरवाटी

(4) दक्षिणी राजस्थानी या मालवी।[2]

मोतीलाल मेनारिया ने राजस्थानी बोली को पांच वर्गों में विभाजित किया है-

(1) मारवाड़ी

(2) ढूँढाड़ी

(3) मालवी

(4) मेवाती

(5) बागड़ी[3]

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

डा. मनमोहनस्वरूप माथुर राजस्थानी हिन्दी पर विचार करते हुए राजस्थानी के भौगोलिक क्षेत्र में राजस्थान, मध्यप्रदेश (मालवा), पंजाब (फाज़िल्का, अबोहर, मलोट, भटिण्डा) तथा हरियाणा (हिसार, भिवाणी, सिरसा, महेन्द्रगढ़, गुड़गांव) के क्षेत्रों को शामिल किया है।[4]

डा. गजेन्द्र सिंह नेहरा ने राजस्थानी की चार बोलियों को विविध उपबोलियों सहित वर्णित किया हैः

1. उत्तरी पूर्वी राजस्थानी - मेवाती, अहीरवाटी।
2. पूर्वी राजस्थानी- तोरावटी, जयपुरी, काठौड़ा, चैरासी, नागरचाली, किशनगढ़ी, अजमेरी, हाड़ौती आदि।
3. दक्षिणी राजस्थानी- वागड़ी एवं भीली।
4. पश्चिमी मारवाड़ी-मारवाड़ी (थळी, बीकानेरी, गौड़वाड़ी, बागड़ी, मेवाड़ी शेखावटी)।[5]

डा. मनमोहनस्वरूप माथुर ने राजस्थानी की बोलियों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।[6] जिसका विवरण निम्न है-

1. पश्चिमी राजस्थानी (मारवाडी)
2. मध्यवर्ती राजस्थानी
3. उत्तर-पूर्वी राजस्थानी
4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी
5. नीमाड़ी - नीमाड़, भोपावर।

अपने विवरण में उन्होंने पश्चिमी राजस्थानी अर्थात मारवाड़ी की पांच उपबोलियों की चर्चा की है जो निम्नवत हैः-

क) खड़ी मारवाड़ी - मारवाड़

ख) पूर्वी मारवाड़ी- मारवाड़, किसनगढ़, मेरवाड़

ग) दक्षिणी मारवाड़ी- गोड़वाड़, सिरोही, पालनपुर, मेवाड़

घ) पश्चिमी मारवाड़ी- जैसलमेर

ङ) उत्तरी मारवाड़ी- बीकानेर, शेखावटी, बागड़

विवेच्य शोधकार्य बागड़ी बोली के लोक साहित्य के संकलन से संबंधित है। बागड़ी का शाब्दिक अर्थ बागड़ प्रदेश की भाषा से है, जिसमें बागड़ का अर्थ रेगिस्तान से है। भौगोलिक दृष्टि से बागड़ गहरा भूमिगत जलस्तर वाला प्रदेश है, जो शेखावटी प्रदश को सम्मिलित करता हुआ दिल्ली तक का क्षेत्र है। कहीं-कहीं बाँगर नाम से भी बोला जाता है, वर्तमान में यह नाम कम ही प्रयुक्त होता है, लेकिन भाषा के अर्थ में बागड़ी हनुमानगढ़, श्री गंगानगर एवं समीपवर्ती क्षेत्रों की बोली हेतु ही प्रयुक्त होता है।[7] इस प्रकार बागड़ी मूलरूप से मारवाड़ी बोली की एक उपबोली है जो अपने विस्तृत क्षेत्र एवं विविधतामुखी स्वरूप के कारण एक स्वतंत्र बोली के रूप में विकसित हो चुकी है।

बागड़ी बोली का परिचय - बागडी बोली की विशेषता यह है कि यह एक मिश्रित बोली है। इसमें राजस्थानी, हरियाणवी, पंजाबी और बहावलपुरी बोली के शब्द मिश्रित है। मिश्रित होने के कारण इसे बिगड़ी बोली कहा गया जो धीरे धीरे बागड़ी के रूप में विख्यात हो गयी। मारवाड़ी बोली के निकट होने के कारण इसे कुछ लोग मारवाड़ी का ही एक उपरूप कहते हैं परंतु यदि इसमें निहित पंजाबी एवं हरियाणवी के शब्दों को देखा जाए तो मारवाड़ी से इसका अंतर स्वतः स्पष्ट हो जाता है। लोकगीत एवं लोक कथाओं, मुहावरों एवं लोकोक्तियों के रूप इस बोली में एक समृद्ध साहित्यिक विरासत मौखिक रूप में निहित है।

बागड़ी बोली का भौगोलिक प्रसार - बागड़ी बोली का प्रसार दक्षिण-पश्चिमी पंजाब (अबोहर, फाजिलका एवं मलोट), उत्तरी राजस्थान (श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़), उत्तर पश्चिमी हरियाणा (सिरसा एवं डबवाली) एवं पाकिस्तान (बहावलपुर रियासत) आदि क्षेत्रों में लगभग दो करोड़ लोग इस भाषा का प्रयोग करते हैं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

बागड़ी लोक गीतों का परिचय

बागड़ी एक लोक बोली है और लोक बोली में संरचित गीतों का कोई आदि श्रोता नही होता और वो शास्त्रीय परम्पराओं के बंधन से मुक्त होते हैं। इन पर किसी लेखक की छाप नही होती। ये लोक द्वारा किसी अवसर पर मिलकर गाए जातें हैं तथा समय के साथ-साथ एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित होते रहतें हैं। इनमें लोक जीवन से जुड़े प्रत्येक विषय को गीतों में आबद्ध किया गया है।

बागड़ी लोकगीतों में जन्म से लेकर मृत्यु तक हर संस्कार के गीत हैं। इनमें जन्म, सगाई, टीका, शादी, त्योहार, कृषि, ऋतु, रात जगाने, जागरण, सत्संग व मृत्यु सभी अवसरों के गीत मिलतें हैं। लोक में जो लोकगीत की परम्परा है यद्यपि वो शास्त्रीय मापदंडों के अनुसार नही होती और लोकगीतों के रचयिता का पता नही होता फिर भी इनमें सांगीतिक तत्व और साहित्य मौजूद रहतें है। संगीत और साहित्य का बहुत गहरा संबंध होता हैं एवं संगीत के माध्यम से ही साहित्य पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढतें हैं। बागड़ी बोली बोलने वाले क्षेत्र में जाकर बागड़ी गीतों को लिपिबद्ध तथा रिकार्ड किया गया। इसके उपरांत इन गीतों में निहित गेयता पक्ष का विश्लेषण किया गया। बागड़ी लोकगीतों में विविध संस्कारों से संबंधित गीत उपलब्ध है जिनमें संगीतात्मकता के तत्व मौजूद है, जिनका विवरण इस प्रकार है-

मृत्यु गीत

समाज में किसी की मृत्यु हो जाने पर उनके परिचित शोकाकुल हो जातें हैं। उस अवस्था में शोक का भाव प्रदर्शित करने के लिए जिन गीतों को माध्यम बनातें हैं, वह मृत्युगीत कहलातें हैं। बागड़ी में इनको 'हरजस' कहा जाता है। इनमें कुलदेवता, एकादशी के गीत, गुरू ज्ञान एवं गुरू की महिमा का बखान करते हुए मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया जाता है। ये 'हरजस' हमें जीवन के सत्य से रूबरू करातें हैं और हमें अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन को सार्थक बनाने का उपदेश देतें हैं।

यह 'हरजस' कहरवा या दादरा ताल में निबद्ध होतें हैं। इनमें कुछ भजनों में वाद्य संगति के लिए ढोलक, खड़ताल व ताली का प्रयोग किया जाता है तथा कुछ का गायन बिना वाद्य संगति के होता है। इन भजनों की स्वरलिपि रचना क्लिष्ट न होकर जनसाधारण होती है जिनमें अधिकतर संगीत के मध्य सप्तक का प्रयोग होता है। इन गीतों मे निर्वेद भाव की प्रधानता होती है। प्रस्तुत भजन, संगीत में प्रयुक्त होने वाली उपशास्त्रीय ताल कहरवा में निबद्ध है।

चार-चार तो मेर कमरा, मा बिजळी गा पखां
मेरी पड़छीयां ढाळी रे सांवरा खाट, बुढापो बैरी आय ग्यो
चार-चार तो मेरअ भैस्यां दूजअ, मनै पलेवण घालअ
मेर मिरिय दूध पर होगी राड़, बुढापो बैरी आय ग्यो
सारअ घर गा रोटी जीमअ, मनै कोई ना पुछअ
मेरूं भूखो रेयो ना जाय, बुढापो बैरी आय ग्यो
सिरक-सिरक चुल्ह कन आई, बासी रोटी लाधी
मनअ कुड़छी न लाधी रे सावरां दाळ, बुढापो बैरी आय ग्यो
हळियो बावंतो बेटो रे आयो, माता क्यों सूत्या हो उदास बुढापो बैरी आय ग्यो
चार-चार तो मेर कमरा, मा बिजळी गा पंखा
मेरी पड़छीयां ढाळी रे सांवरा खाट, बुढापो बैरी आय ग्यो
चार-चार तो मेरअ भैस्यां दूजअ, मनै पलेवण घालअ
मेर मिरिय दूध पर होगी राड़, बुढापो बैरी आय ग्यो
सारअ घर गा रोटी जीमअ, मनै कोई ना पुछअ
मेरूं भूखो रेयो ना जाय, बुढापो बैरी आय ग्यो
सिरक-सिरक चुल्ह कन आई, बासी रोटी लाधी
मनअ कुड़छी न लाधी रे सावरां दाळ, बुढापो बैरी आय ग्यो
चाल मेरी माता नानेरअ चाला, मामअ स्यूँ कर स्या बात

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मामा थे ही म्हान रास्तो बताओ, बुढापो बैरी आय ग्यो
चाल मेरा भाणजा गुरू कन चालां, गुरू जी स्यूँ कर स्या बात
गुरू जी मुक्ति गो मारग बताय, बुढापो बैरी आय ग्यो

इसमें वृद्धावस्था की परिस्थितियों से जूझ रही एक मां और उसके बेटे के बीच का संवाद है। कैसे एक वृद्ध के साथ परिवार द्वारा उपेक्षित व्यवहार किया जाता है। इसके उपाय में उसके पुत्र और भाई द्वारा गुरू ज्ञान को ही मुक्ति का मार्ग बताया गया है।

हल्दी गीत

बागड़ी समाज में शादी से पाँच दिन पहले सबसे पहली रस्म हल्दी की होती है। बागड़ी समाज में हल्दी की रस्म को 'बिरद' बैठाना कहा जाता है। वास्तव में बिरद शब्द 'वृद्ध' का तद्भव रूप है। इस रस्म में मौहल्ले की सामान्यतः वृद्ध स्त्रियों को आमंत्रित किया जाता है जो शादी में होने वाली परंपराओं पर विचार विमर्श करती हैं। इस रस्म में दुल्हा या दुल्हन को हल्दी लगाकर नये जीवन की शुरूआत के लिए आशीर्वाद दिया जाता है। इस रस्म में हल्दी के गीत, देवताओं के गीत व बधावा आदि गीत गाए जातें हैं। 'बिरद' की एक रस्म में इसमें काम आने वाली वस्तुओं ओखली, मूसल, लोटा, हांडी, झाड़ू, छाज आदि की पूजा की जाती है तथा धागा बांधा जाता है। इसी समय परिवार की सात सुहागिनों को भी धागा बांधा जाता है। विविध रस्मों के पश्चात अंत में बधावा गाया जाता है। उदाहरण.

ऊखळ डोरो मुसळ डोरो
डोरो लाडलड़ी ग हाथ गयो बल देयो बिनायक
हांडी ज डोरो, ढकणी ज डोरो
डोरो है सात सवागण
भारी ज डोरो, छालअ डोरो
डोरो है लाडलड़ी ग हाथ गा
लोटअ ज डोरो, डाळी ज डोरो
डोरो है सात सवागणां।

प्रस्तुत गीत बिरद की रस्म का मुख्य गीत है तथा यह लड़का, लड़की दोनों की बिरद में गाया जाता है। इस गीत में बिरद में काम आने वाली वस्तुओं ओखली, मूसल, लोटा, हांडी, झाड़ू, छाज आदि की पूजा तथा सभी वस्तुओं को धागा बांधा जा रहा है तथा परिवार की सात सुहागिनों को भी धागा बांधा जा रहा है।

हल्दी गीत प्राय शुद्ध स्वरों में निबद्ध होते है, जिनमें श्रृंगार और मांगलिकता की भावना होती है। इनमें प्रायः कहरवा, दादरा इत्यादि तालों का प्रयोग किया जाता है। इन गीतों की लय प्राय मध्य या विलंबित गति की होती है। गीत की लय में ज्यादा बदलाव नहीं किया जाता है एवं लय को समान रखकर ही गाया जाता है। इन गीतों के साथ प्रायः ढोलक और चम्मच का प्रयोग लय को दर्शाने के लिए वाद्य के रूप में किया जाता है। यह गीत मुख्यत महिलाओं द्वारा समूह में गाए जाते है जिसमें प्रमुख गायिका गीत का मुखड़ा गाती है एवं अन्य महिला गायिका उसका अनुसरण करती है।

बिरद का बधावा . 'बधावा' किसी भी रस्म का आखिरी गीत होता है। यहां बधावा का अर्थ 'बधाई' से है। किसी भी रस्म के सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने के बाद देवी-देवताओं का आभार प्रकट करने के लिए गाया जाता है। यह गीत भक्ति भाव प्रधान होते है इसलिए इन गीतों में भैरवी एवं खमाज थाट के रागों की छाया दृष्टिगोचर होती है। इन गीतों की रचना प्रायः मध्य सप्तक में होती है। बधावा गीत की भाषा सरल एवं आध्यात्मिक होती है। इन गीतों में तुकबंदी का भी प्रयोग होता है। यह गीत भी महिलाओं द्वारा समूह में वाद्यों के बिना गाए जाते है। उद्धारण.

पेलो बधाओ साएबा, सिव जी घर आयो जे
जांगअ तो गणेश बेटो जलमियो जे
गणेश बेटअ ओ साएबा के कुल तारयो जी
रिध-सिध ल्याया लाडेलअ ग ब्याव म जी
दूजो बधाओ साएबा, अंजनी घर आयो जी

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

जांगअ तो हनुमत बाबो जलमियो जे
हनुमत बाबअ ओ साएब के कुल तारयो जी
कारज सारया लिछमण राम गा जे
तीजो बधाओ साएबा दशरथ घर आयो जी
जांगअ तो राम र लिछमण जलमिया जे
राम र लिछमण साएबा के कुल तारया जे
धनुष उठाई सीता परणी जे
चैथो बधाओ साएबा कौशल्या घर आयो जे
जांगअ तो केरा-पांडु जलमिया जे
केरू र पांडु के कुल तारया जे
केरू तो हारया पांडु तो जीतया जे
पाँचवो बधावो साएबा (पिता का नाम) घर आयो जे
जांगअ तो बेटो (बेटे का नाम) जलमियो जे
(बेटे का नाम) ओ साएबा के कुल तारयो जे
बंस बधायो ए आपगअ बाप गो जे
ईस्योड़ो बधाओ साएबा मोल मंगाओ जे
ईस्योड़ो बधाओ गो म्हानअ चाव ओ जे
ईस्योड़ो बधाओ ए गोरी धण मोल ना आवअ जे
लाल पड़ोसण रळ-मळ गाय ल्यो जे।

मेहंदी गीत

बागड़ी समाज में शादी से पहली रात मेहंदी की रस्म होती है जिसे 'रातीजोगा' कहा जाता है। इसमें लड़का-लड़की को मेहंदी चढाने की मुख्य रस्म होती है। रातीजोगा में थापो, गुढो रंग, खाती गो बेटो, दीयो, मेहंदी, काजळ, अधरातियो, पीपळी, बिणजारा, हथिनी, भांग, कोयलड़ी, कलेओ, जेतल, सजनां, कुकड़ो, नींद, चोरटो, सूंठ-मसरको, लिछमी आदि गीत तथा कुल देवता के गीत क्रम से गाये जातें हैं। इन गीतों में कहरवा ताल का प्रयोग होता है। यह गीत श्रृंगार रस प्रधान होतें हैं तथा इनमें पति-पत्नी, सास-बहु आदि के आपसी संवाद, नोक-झोंक, हंसी-ठिठोली स्वतः ही आ जाते हैं। इनमें कुछ गीत ताली तथा वाद्य यंत्रों के साथ गाये जातें हैं।

गुढो रंग

गुढो रंग इस रस्म का मुख्य गीत है जो लड़का या लड़की को मेहंदी चढाते समय गाया जाता है। इस गीत द्वारा महिलाएं मेहंदी के गहरा होने की कामना करती हैं।

ल्याई ओ लाडेलगा जामी जी ओ गुढो रंग तोल धण मोलेव
औ गुढो रंग बीकाणअ री गळीयां ल्याई ओ
ओ रंग सूरज जी गअ सुरंगअ
राणी ए रोयल ग ओ चुड़लअ
ओ गुढो रंग बीकाण री गळीयां ल्याई ओ
लाडेलअ गा दादा जी ओ, ओ गुढो रंग
ओ रंग चन्द्रमा जी ग सुंरगअ
राणी ए रोयल ग ओ चुड़लअ
ओ गुढो रंग बीकाण री गळीयां ल्याई ओ

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ओ रंग लाडेलअ ग सुरंगअ,
बाई ऐ लाडेली गअ ओ चुड़लअ
ल्याजो लाडेलअ गा काका जी ओ गुढो रंग।

उपरोक्त गीत में इसमें लड़के या लड़की की मां, उसके पिता, दादा, काका आदि को बीकानेर से गहरे रंग की मेहंदी लाने के लिए कहती हैं।

बिणजारा

बिणजारा गीत रातीजोगा में गाया जाने वाला मुख्य गीत है जिसमें पति-पत्नी का आपसी संवाद तथा नोक-झोंक मिलती है। यह गीत प्रश्नोत्तर शैली पर आधारित होता है जिसमें प्रिय और प्रीतम के बीच का संवाद संगीत के मार्मिक स्वरों द्वारा दर्शाया जाता है। यह गीत मध्य लय में गाए जाते है एवं इनकी स्वर रचना मध्य सप्तक में की जाती है। यह गीत बिना वाद्यों के महिलाओं द्वारा समूह में गाए जाते है।

बिणजारा रे लोभी ओर लदालद जाय
थारअ घरे सुत्या ना सरअ बिणजारा रे-2
बिणजारी ए औरां ग खरची दाम, मारअ कन खरची कोनी
बिणजारी ए लोभण औरां ग खरची दाम, मारअ कन खरची कोनी
बिणजारा रे लोभी ले जा गळ गो हार, चिटली गो ले जा मूंदड़ो
बिणजारी ए कण घड़ायो ए थानअ गळ गो हार, कण घड़ायो थानअ मूंदड़ो
बिणजारा रे लोभी सुसरअ घड़ायो मन हार, बाप घड़ायो मूंदड़ो। बिणजारा रे
बिणजारी ए लोभण के मासां गो हार, के मासां गो मूंदड़ो। बिणजारी ए
बिणजारा रे नौ मासां गो हार, दस मांसा गो मूंदड़ो। बिणजारा रे
बिणजारी ए कठअ बिकअ गो हार, कठअ बिकअ गो मूंदड़ो। बिणजारी ए
बिणजारा रे लाभी बजारां बिकअ गो हार, हाटां बिकअ गो मूंदड़ो। बिणजारा रे
बिणजारी ए लोभण गयो छापरिय ग ताण, घोड़ा गाड़ी ढाळ ली। बिणजारी ए
बिणजारा रे लोभी महंगा बिकअ ला हीरा लाल, मंहगा बिकअ ला खारक खोपरा। बिणजारा रे
बिणजारा रे लोभी कुंडअ भेई दाळ, छिंकअ टांग्यो चूरमो। बिणजारा रे
बिणजारी ऐ लोभण जे होंती तू साथ, गोडो दे गे लदांवतीं। बिणजारी ऐ
बिणजारी ऐ लोभण जे हवती धण साथ, गोडो दे गे लदांवती। बिणजारी ऐ
बिणजारा रे लोभी ल्याई कीड़ी गो मांस, माच्छर गो काळजो। बिणजारा रे
बिणजारी ऐ लोभण कुळम होव सो माँग, बिना होयो ना सांपजअ। बिणजारी ऐ
बिणजारा रे लोभी ल्याई धुँअ गी पांड, पाणी गो ल्याई बुलबलो। बिणजारा रे
बिणजारी ऐ लोभण कुळम होव सो माँग, बिना होयो नां सांपजअ। बिणजारी रे
बिणजारा रे लोभी ल्याई कँुवारी गो दूध, बांझड़ गो ल्याई डीकरो। बिणजारा रे
बिणजारी ऐ लोभण कुळम होव सो माँग, बिन होयो ना सांपजअ। बिणजारी ऐ
बिणजारा रे लोभी बारां बरसां गो पूत, कुण परण सी डीकरो। बिणजारा रे
बिणजारी ऐ लोभण रेईयो देवर जेठां ग साथ, काका परणा सी डीकरो। बिणजारी ऐ
बिणजारा रे लोभी बीस बरस गी धींव, कुण परणा सी धींवड़ी। बिणजारा रे
बिणजारी ऐ लोभण रेईयो बीरां ग साथ, मामा परणा सी धींवड़ी। बिणजारी ऐ

उपरोक्त बिणजारा गीत रातीजोगा में गाया जाने वाला मुख्य गीत है जिसमें पति-पत्नी का आपसी संवाद तथा नोक-झोंक मिलती है। इसमें पत्नी पति से कहती है कि वह पैसा कमाने के लिए दूसरे देश जाए तथा काम शुरू करने के लिए अपने जेवर भी देती हैं। जाने के बाद दोनों एक-दूसरे को याद करतें है तथा पति अपनी पत्नी को हमेशा अपने परिवार के साथ रहने की सलाह देता है। यह गीत कहरवा ताल में गाया जाता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

लिछमी

यह गीत राती जोगा की रस्म का अंतिम गीत है जो सुबह 4 बजे गाया जाता है। यह भी कहरवा ताल में गाया जाता है। इसमें लक्ष्मी मां के हर जगह जैसे गांव के बाहर, घर, आंगन, कमरे, खेत आदि में उपस्थित रहने का भाव मिलता है। यह गीत लक्ष्मी माता की स्तुति में गाया जाता है तथा लक्ष्मी मां से विनती की जाती है कि वह शादी वाले घर में आएं ओर उसे समृद्ध बनाएं। इस गीत का गायन समय प्रातः काल होने के कारण इसकी स्वर रचना मंद्र एवं मध्य सप्तक में की जाती है। लिछमी गीतों की शब्दावली आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होती है। उद्धारण.

अब म्हारी लिछमी ए बाई कांकड़ म आई
दुधां तो बरस्यो है मेह, लिछमी ए बाई म्हार घरे आई
अब म्हारी लिछमी ए बाई बाखळ म आई
चैकी पर सुत्या जामी आप। लिछमी ए बाई म्हार घरे आई
अब म्हारी लिछमी ए बाई बाखळ म आई,
बाखळ म रिड़की भूरी भैंस। लिछमी ए बाई .....
अब म्हारी लिछमी ए बाई आंगण म आई
मईड़ घमोड़अ बुडली सास। लिछमी ए बाई .....
मईड़ो बिलौव बुडली सास। लिछमी ए बाई .....
अब म्हारी लिछमी ए बाई खेतां म गेई
हळीयो तो बावअ मोबी पूत। लिछमी ए बाई .....
अब म्हारी लिछमी ए बाई कोठां म आई
अन्न-धन गा भरया ए भंडार। लिछमी ए बाई .....
न्यूंती ना आई ए लिछमी, बुलाई ना आई
आ तो आ लिछमी बाई, आप ही आई
तु म्हारी ए लिछमी बाई आप ही आई
सात जलम म्हारी लिछमी पुठी ना जाई
म तो ए लिछमी बाई थारा गुण गाऊँ-2

जखड़ी

शादी में टीका की रस्म के पश्चात शादी तक लड़का-लड़की के घर में गीत गाए जातें है। लड़के के घर में गाए जाने वाले गीत को 'बनड़ा', लड़की के घर में गाए जाने वाले गीत 'बनड़ी' तथा जो गीत दोनों के घर में गाए जातें हैं, वो 'जखड़ी' कहलातें हैं। इनमें श्रृगांर रस की प्रधानता होती है। यह कहरवा ताल में ताली के साथ गाई जाती है। प्रस्तुत गीत जखड़ी का ही एक उदाहरण है-

बन्ना जयपुर जाइये ओ, बठअ स्यूँ ल्याइयो धणकपुरी
बन्नी भांत न जाणु ओ, किस्यो क लागअ धणकपुरी
बन्ना हर्या-हर्या पल्ला ओ, गुलाबी रंग धणकपुरी
बन्नी ओढ गे दिखाइये ओ, किसी क लागअ धणकपुरी
बन्ना महलां म ओढी ओ, आंगण म आंता तिसळ पड़ी
बन्ना झूठ कोनी बोलूं ओ, निजर थारी माउ गी लागी
बन्ना लूणगढ जाइये ओ, बठअ स्यूँ ल्याइयो लूण गी डळी
बन्नी वार-वार फेंको ओ, नजर जासी लारली गळी।।

इसमें बनड़ी बनड़े से जयपुर से एक चुनरी लाने के लिए कह रही हैं।

देवता के गीत

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

बागड़ी समाज में मंदिर, कीर्तन, जागरण, रात, शादी सत्संग आदि में देवताओं के गीत गाए जातें हैं। यह गीत भक्ति प्रधान होतें हैं तथा इनमें देवताओं की वेश-भूषा, आभूषण, शस्त्र, वाहन, प्रसाद और उनकी महिमा का गुणगान किया जाता है। यह गीत भी ताली के साथ कहरवा ताल में गाए जातें है। यह देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, घर में सुख-समृद्धि लाने के लिए तथा किसी कार्य के सफलतापूर्वक हो जाने पर गाये जाते हैं। निम्न गीत देवता गीत का एक उदरहरण है-

गोगा जी

बागड़ी समाज के लोक देवता गोगा जी एक नायक थे, इसलिए उनकी उपासना से संबंधित गीत वीर रस से परिपूर्ण लोकगीत होते हैं। एक उदाहरण निम्न हैः

इक धोळी सी मेड़ी मं-2
कोई बेठ्या गोगो चैहाण, रात सपनअ् मं-2
लीलो सो घोड़ो बिराजअ-2
बांगी काठी करअ रे कमाल, रात सपनअ मं-2
बांगअ गळ मं नाग सोवअ-2
बांगअ जेवड़यां करअ रे कमाल, रात सपनअ मं-2
कानां मं कुंडल बिराजअ -2
बांगा मोती करअ रे कमाल, रात सपनअ मं-2
इक धोळी सी मेड़ी मं-2
कोइ आया गोरखनाथ, रात सपनअ मं-2
बांगअ चोटयां गा नारेळ चढावअ-2
बांगी धजा करअ रे कमाल, रात सपनअ मं-2
पीवण न दूधो चहियअ, बागां जातरी दुध पिलावअ-2
चरणा मं सीस निवावअ,
कोई सिंवरया गोरखनाथ, रात सपनअ मं-2

निम्न गीत गोगा जी का स्तुति गीत है जिसमें उनके मंदिर, उनके वाहन घोड़ा, कुंडल, ध्वजा आदि की प्रशंसा की गई है। तथा यह भी बताया गया है कि कैसे उनके भक्त उनकी सेवा, पूजा करतें हैं। यह गीत भी कहरवा ताल में गाया जाता है।

गणगौर के गीत

राजस्थान में गणगौर पर्व की बहुत मान्यता है और इस पर्व को राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। बागड़ी समाज में इस अवसर पर गीत गाए जातें है जिनमें शिव-पार्वती का गुणगान किया जाता है। गीतों में नायक के स्थान पर शिव एवं नायिका के स्थान पर पार्वती का नाम लिया जाता है। ये गीत संगीत की उपशास्त्रीय ताल कहरवा या दादरा में होतें हैं। यह गीत श्रृंगार रस प्रधान होतें हैं तथा मध्य लय में गाए जातें हैं।

ओ कुण सुत्यो पोढणअ ऐ, ओ कुण सुत्यो पोढणअ ऐ
आ कुण घालअ पून नागर बेलणी
ईसर सुत्यो पोढणअ, ईसर सुत्यो पोढणअ
बहु गोरल घालअ पून, नागर बेलणी
घलती घलाउंती न्यूं बोली, म्हानअ अगड़ घड़ाय, नागर बेलणी
अगड़ घड़ाउं मेरी भेना न, थानअ नोसर हार, नागर बेलणी
इतनो केंत रूस गई, पीव भाजी जाय, नागर बेलणी
देवर मनाउतों निसरयो, भावज पाछी आय, नागर बेलणी

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

थारी मनाई ना मानूं, बडोड़ बीरअ गी रीस, नागर बेलणी।

यह गीत गणगौर के त्योहार पर गाया जाता है। इसमें नायक-नायिका के रूप में शिव-पार्वती को लिया गया है। जब शिव पार्वती को जेवर बनवाने के लिए मना कर देते हैं तो पार्वती रूठ कर मायके चली जाती है और किसी के मनाने पर नही आती है। वह चाहती है कि शिव ही उन्हे मनाकर लेकर जाएं। यह गीत भी कहरवा ताल में ही गाया जाता है।

ऋतु गीत

ग्रामीण समाज में विभिन्न ऋतुओं के गीत गाए जातें हैं। इनमें वर्षा ऋतु के गीतों का विशेष महत्व है जो सावन के महीने में गाए जातें है। गीतों के साथ ही वर्षा का स्वागत किया जाता है।

यह लोकगीत श्रृंगार रस प्रधान एवं चंचल प्रकृति का गीत है तथा इसमें द्रुत लय में कहरवा ताल का प्रयोग किया जाता है। इन गीतों की रचना मध्य एवं तार सप्तक के स्वरों में की जाती है जिससे यह गीत उत्साह एवं उल्हास से पूर्ण होते है। यह गीत महिलाओं द्वारा द्रुत कहरवा, दादरा इत्यादि तालों में गाए जाते है। इन गीतों की शब्दावली ऋतुओं में होने वाली गतिविधियों का बखान करती है। इन गीतों के साथ ढोलक, चम्मच एवं मंजीरा इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण.

सावण सुरंगो भादवो ऐ
कोई आई रे सावणिया गी तीज म्हारा मोरेला, सावण ले रयो जे
मुसळधारां ओसरयो कोई भरग्या समंद तलाय म्हारा मोरेला, सावण ले रयो जे
आ कुन बाई सासरअ ऐ बीरो यो कुण ल्यावण जाय म्हारा मोरेला, सावण ले रयो जे
गौरां बहु सासरअ ऐ बीरो ईसर ल्यावण जाय म्हारा मोरेला, सावण ले रयो जे
हींड मंडा दे ओ हां ओ मेरा अळ-जळ जामी बाप आई रे, सावण गी तीजयां हींड स्यां
जोहड़ो खुदा दे ओ मेरा अळ-जळ जामी बाप आई रे, सावण गी तीजयां न्हाय स्यां
खुदयो खुदायो ए धीवड़ मेरी पड़यो ए चम्पेल भोळा खाय आई ऐ, सावण गी तीजयां न्हाय स्यां
हींड मंडा दयो ओ मेरा कान कवंर सा बीर आई रे, सावणीयां गी तीजयां हींड स्यां
मंडयो मंडायो ऐ भेनड़ मेरी पड़यो चम्पेल गी डाळ, हींडण वाळी बाई सासरअ

यह गीत सावन तीज के दिन गाए जाने वाले गीतो का ही एक उदाहरण है जिसमें सावन तीज के दिन होने वाली विभिन्न गतिविधियों जैसे - झूला झूलना, मेहंदी लगाना, नाचना, गीत गाना आदि का जिक्र मिलता है।

नृत्य गीत

शादी में टीका की रस्म के बाद लड़का व लड़की दोनों के घरों में गीत गाए जातें है तथा कुछ गीतों पर ताली व एड़ी की थाप देकर नृत्य किया जाता है। यह गीत भी कहरवा ताल में निबद्ध है। यह अन्य मांगलिक अवसरों पर भी गाए जातें है। यह गीत द्रुत लय में गाए जाते है एवं इनकी स्वर रचना तार सप्तक के स्वरों में की जाती है जिससे नृत्य गीत उत्साह से भरे हुए होते है।

इक बीर बरस गी छोरी
इक बीस बरस गो छोरो
जंगल मं चरावअ भेड, मेरा दिल धड़क्या
छोरी भेड परां न करले
मेरो खा गी चिणा वाळो खेत, मेरा दिल धड़क्या
छोरा उंची-उंची बाड़ लगा ले
मेरी यांही चरअ ली भेड, मेरी दिल धड़क्या
छोरा म्हारअ देस आइए,
तेरी बुगी लेस्यू पाड़, मेरा दिल धड़क्या

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

छोरी छाछ लेवण न आइए
तेरा डोलू ल्यू ला खोस, मेरा दिल धड़क्या
छोरा पाणी लेवण न आइए
तेरी मटकी घ्यूं ला फोड़, मेरी दिल धड़क्या।

यह गीत लड़का-लड़की का प्रेम-प्रसंग युक्त नोक-झोंक है। इसमें लड़का-लड़की भेड़ चराने गये हैं जहां उनकी नोक-झोंक हो जाती है तथा वो एक दूसरे को घर आने से भी मना करतें हैं। इसके बावजूद इनमें प्रेम की भावना हैं।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि बागड़ी लोक गीत पीढ़ीयों से चले आ रहे मौखिक परंपरा के अनूठे उदाहरण हैं। इन गीतों में भारतीय ज्ञान परंपरा निहित है जिसके द्वारा एक पीढ़ी अपनी भावी पीढ़ी को अपना ज्ञान और अनुभव गीतों के माध्यम से सहज ढंग से स्थानांतरित करती है। जहाँ एक ओर लोकमन भाव और विषय की दृष्टि समृद्ध दिखाई पड़ता है, वहीं दूसरी ओर शैली की दृष्टि से भी ये गीत परिपक्व दिखाई पड़ते हैं। इन गीतों की संरचना का संगीतात्मक दृष्टि से विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि अधिकां गीत ृगार रस एवं भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं। इन लोकगीतों में उपषास्त्रीय ताल जैसे कहरवा और दादरा का प्रयोग मिलता है। इन गीतों की गायन शैली आकर्षक एवं जनसाधारण है। यह लोकगीत अधिकतर मध्य सप्तक और मध्य लय में गाए बजाए जाते हैं। बागड़ी लोक गीतों वाद्ययंत्रों का प्रयोग अधिक देखने को नहीं मिलता। आमतौर गीतों में स्थायी व अंतरे की संगीतिक धुन एक दूसरे से भिन्न होती है परंतु इन बागड़ी लोकगीतों में ऐसा न होकर पूरे गीत में प्रयुक्त अंतरों की धुन, स्थायी धुन की ही समान होती है। यह गीत सामान्यतः समूह में महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं परंतु कुछ लोकगीत जैसे होली, जागरण और सत्संग के गीत पुरुषों द्वारा गाए जाते है। पीढ़ियों से चली आ रही इस मौखिक परंपरा का संगीतात्मता की दृष्टि विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि यह लोकगीत बागड़ी समाज की ही नहीं अपितु भारतीय ज्ञान पंरपरा की एक अमूल्य धरोहर है, जिसका संगीतात्मकता की दृष्टि से यदि संकलन किया जाए तो यह अत्यंत उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगा।

संदर्भ

1 राजस्थान, संजय गुप्ता, पृ.202
2 क्रिसन रुकमणी री वेलिः सं. नरोत्तमदास स्वामी, प्रस्तावना, पृ.1
3 राजस्थानी भाषा और साहित्य: मोतीलाला मेतारिया, पृ.3
4 राजस्थानी भाषाः भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, डा. मनमोहनस्वरूप माथुर, राजस्थानी गंरथागार, जोधपुर, पृ.17
5 राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियों का स्वरूपगत चित्रण, डा. गजेन्द्र सिंह नेहरा, गौतम बुक कंपनी, जयपुर, पृ. 23-24
6 राजस्थानी भाषाः भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, डा. मनमोहनस्वरूप माथुर, राजस्थानी गंरथागार, जोधपुर, पृ.17
7 राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियों का स्वरूपगत चित्रण, डा. गजेन्द्र सिंह नेहरा, गौतम बुक कंपनी, जयपुर, पृ. 44